प्रसंगवश

जैरे, मोबुतू और विरोधी दल

शशिधर खा

दुनिया के शायद ही किसी देश मे इतनी बार सत्तापलट की कोशिशें हुई होंगी, जितनी कि ज़ैरे मे हो चुकी हैं। उसके ५६ वर्षीय राष्ट्रपति मोबुतू सेसे सीको पर सात बार कातिलाना हमला हो चुका है। देश के पंद्रह से भी अधिक विरोधी दलों में से एक भी राष्ट्रपति को पदस्थ देखना नहीं चाहता। विपक्षी नेता राष्ट्रपति से इतने खफा हैं कि उनमें से कई ने हमलावरों का साथ दिया है।

मगर इतनी मुखालिफत झेलते हुए और जान का इतना जोखम उठाते हुए भी मोबुतू लगभग एक चौथाई सदी से सक्रिय राजनीति में डटे हुए हैं। लंबे शासन काल की दृष्टि से वे अफ्रीकी नेताओं में बेजोड़ हैं। एक और दृष्टि से भी वे बेजोड़ हैं। जैरे (तत्कालीन बेल्जियन कांगो) क १९६०-६४ के गृहयुद्ध के चार प्रधान पात्र लुमुंबा, कसाबुबू और शोम्बे में से सिर्फ वही जीवित हैं और सत्ता का भोग कर रहे हैं।

मोबुतू का वर्तमान कार्यकाल १९९१ तक है। १९८४ में वे तीसरी बार सात वर्ष के लिए राष्ट्रपति चुने गये। उसके पूर्व १९७० और १९७७ में उन्हें चुना गया था। तीनों बार उन्हें ९९ प्रतिशत वोट मिले। १९८४ में चुनाव जीतने के बाद उन्होंने कहा था कि मेरे समर्थक तो मुझे जीवन भर राष्ट्रपति पद पर आसीन देखना चाहते हैं, मगर मैंने स्वयं इसका कड़ा विरोध किया है, क्योंकि मैं 'तानाशाह' नहीं कहलाना चाहता।

मगर सचाई यह है कि लगातार तीन बार अपार बहुमत से चुनाव जीतकर वे पक्के तानाशाह बन गये हैं। विरोधियों के साथ वे जरा भी मुरव्वत नहीं करते। देश की राजधानी किंशासा में उन्होंने विश्वस्त सेनाधिकारियों को अपनी सुरक्षा के लिए तैनात कर रखा है। इनका मुख्य काम है राष्ट्रपति के खिलाफ आवाज उठाने वालों को गोली से उड़ाना और उनकी लाशें गायब करवा देना। लिहाजा अनेक विरोधी नेताओं ने अपनी जान बचाने के लिए पश्चिमी देशों में शरण ली है और वहां से वे मोबुतू के खिलाफ विश्व जनमत तैयार करने में जुटे हुए हैं।

राष्ट्रपति मोबुतू मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए काफी बदनाम हैं और उनके विरोधियों ने इसका खूब जोर शोर से प्रचार भी किया है। एम्नेस्टी इंटरनेशनल ने अपनी ताजी रिपोर्ट में मोबुतू की जमकर खिंचाई की है। पश्चिमी देशों में इधर कुछ समय से दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बोथा से भी अधिक आलोचना मोबुतू की हो रही है।

सत्ता में बने रहने के लिए मोबुतू ने राष्ट्रीय एकता की बार बार दुहाई दी है और सारे विरोधी दलों से अपनी पार्टी पी. आर. एम. (पाप्युलर रेवोल्यूशनरी मूवमेंट या जन क्रांतिकारी आंदोलन) में शामिल होने को कहा है, ताकि एकदलीय शासन पद्धति की नींव डाली जा सके।

इस बात से मोबुतू हैरान हैं कि अपने विरोधियों का सफाया करने की वे जितनी ही कोशिश कर रहे हैं, विरोधियों की संख्या उतनी ही बढ़ती जा रही है। विरोधी दलों के नेता अलग अलग तरीकों से राष्ट्रपति को सत्ताच्युत करना चाहते हैं। पर उन सबकी यह साझी शिकायत है कि राष्ट्रपति चुनाव तो दिखावा भर हैं, मतदान के दिन विरोधी दलों के सदस्यों के बाहर निकलने पर पाबंदी रहती है और मतदाताओं को पहले से बात दिया जाता है कि किसे वोट देना है।

इसके जवाब में राष्ट्रपति बराबर यह दलील देते हैं कि पश्चिमी यूरोप और उत्तर अमरीका में लोग चुनाव का सही अर्थ समझते हैं, मगर अफ्रीका में चुनाव की व्याख्या करना मुश्किल है। इसलिए वे एकदलीय शासन पर जोर देते हैं।

ज़ैरे लगातार बढ़ते विदेशी कर्ज के बोझ से दबा जार हा है। बेतरतीब आर्थिक नीतियों से बड़े उद्योग बंद होने की स्थिति में पहुंच गये हैं। बढ़ते करों से जनता दुहरी हुई जा रही है। सिर्फ राष्ट्रपति के समर्थकों की चांदी है और राष्ट्रपति को सिर्फ विदेशी सहायता का भरोसा है।

अभी मई के प्रथम सप्ताह में १३ विपक्षी दलों ने पड़ोसी देश अंगोला में निर्वासित सरकार कायम करने का निर्णय किया, जिसकी खबर पाने के बाद से मोबुतू की नींद हराम हो गयी। विपक्षी नेताओं में कुछ बातों पर आपसी सहमति हो गयी है और वे अफ्रीका तथा यूरोप के देशों में रहकर निर्वासित सरकार का संचालन संयुक्त रूप से करेंगे। अफ्रीका के रवांडा, बुरूंडी, कांगो और अंगोला तथा पश्चिम यूरोप के बेल्जियम, फ्रांस और स्विट्जरलैंड की सरकारें उन्हें सहायता देने को तैयार हैं। फिलहाल इस निर्वासित सरकार का मुख्यालय शायद पड़ोसी देश अंगोला में रहेगा।

अंगोला में राष्ट्रपति जोसे एडुआर्डो डॉस सांटोस की मार्क्सवादी सरकार है। कुछ दिन पहले तक राष्ट्रपति मोबुतू उसके साथ राजनयिक संबंध रखने के भी विरुद्ध थे। मगर अब अपने देश के विपक्षी नेताओं के रुख के कारण वे सांटोस के आगे झुकने को विवश हो गये हैं। १० मई को उन्होंने विशेष आग्रह के साथ उन्हें अपने यहां बुलाया और उनके साथ सुरक्षा संधि कर ली।

राष्ट्रपति सांटोस ने इस संधि में दुहरी चाल खेली है। उन्हीं की रजामंदी से ज़ैरे के विपक्षी नेताओं ने अंगोला में निर्वासित सरकार स्थापित करने की बात सोची थी, ताकि पड़ोस में रहते हुए वे अपने देश की ताजातरीन स्थिति और गतिविधियों की जानकारी आसानी से पाते रह सकें। मगर सांटोस ने मोबुतू को आश्वासन दे डाला कि अंगोला में उनके विरोधियों को बिलकुल अहमियत नहीं दी जायेगी। इसके बदले में उन्होंने राष्ट्रपति मोबुतू से यह वादा करवा लिया कि 'यूनिटा' विद्रोहियों से निबटने में वे उनकी मदद करेंगे। 'यूनिटा' विद्रोही अंगोला की मार्क्सवादी सरकार को अपदस्थ करने पर तुले हुए हैं और उनका एक भूमिगत अड्डा ज़ैरे में भी है।

पर लगता है, राष्ट्रपति मोबुतू अब स्थिति की गंभीरता को महसूस करने लगे हैं। उन्होंने सभी विपक्षी नेताओं से स्वदेश लौटने का आग्रह किया है और जेलों मे वर्षों से बिना मुकदमे के सड़ रहे विरोधी राजनीतिक कार्यकर्ताओं को बिना शर्त छोड़ने का आदेश दिया है। दो महत्वपूर्ण विपक्षी दल डी. पी. एस. (डेमोक्रेसी एंड सोशल प्रोग्रेस) और जे. एन. पी. (नेशनलिस्ट पार्टी ऑफ ज़ैरे) के नेताओं को उन्होंने सत्ता में महत्वपूर्ण पदों का प्रलोभन दिया है। विरोधी खेमे के अर्थशास्त्रियों को भी उन्होंने नयी आर्थिक नीति तैयार करने में साथ बंटाने को आमंत्रित किया है।

मगर विपक्षी नेता अपनी बात पर अड़े हैं कि जब तक मोबुतू राष्ट्रपति पद से इस्तीफा न दे दें, तब तक मेल मिलाप की कोई बात हो नहीं सकती। (प्रेट फीचर)

प्रभात खबर/रांची
16-6-88